पाठ 2

सुभागी

तुलसी महतो अपनी लड़की सुभागी से बहुत प्यार करते थे। छोटी उम्र में भी वह घर के काम में चतुर और खेती–बाड़ी के काम में निपुण थी। उसका भाई रामू जो उम्र में बड़ा था, बड़ा ही कामचोर और आवारा था।

तुलसी ने सुभागी और रामू दोनों की शादी कर दी। थोड़े दिन बीते। अचानक एक दिन बड़ी आफ़त आ गई। सुभागी बहुत छोटी उम्र में ही विधवा हो गई। सुभागी के दुःख की तो सीमा ही न थी। बेचारी को अपना जीवन पहाड़ जैसा लगने लगा था।

कुछ साल बीते। लोग तुलसी महतो पर दबाव डालने लगे कि लड़की की कहीं दूसरी शादी कर दो। आज कल कोई इसे बुरा नहीं मानता है, तो क्यों सोच–विचार करते हो?

तुलसी ने कहा, ''भाई मैं तो तैयार हूँ, लेकिन सुभागी भी तो माने। वह किसी तरह राज़ी नहीं होती।''

हरिहर ने सुभागी को समझाकर कहा, ''बेटी, हम तेरे ही भले के लिए कहते हैं। माँ–बाप अब बूढ़े हो गए हैं, उनका क्या भरोसा। तुम इस तरह कब तक बैठी रहोगी?''

सुभागी ने सिर झुकाकर कहा, ''आपकी बात समझ रही हूँ, लेकिन मेरा मन शादी करने को नहीं कहता। मुझे आराम की चिंता नहीं है। मैं सब कुछ झेलने को तैयार हूँ। जो काम आप कहो, वह सिर–आँखों के बल करूँगी मगर शादी के लिए मुझसे न कहिए।''

उजड्ड रामू बोला, ''तुम अगर सोचती हो कि भैया कमाएँगे और मैं बैठी मौज़ करूँगी, तो इस भरोसे न रहना।''

सुभागी ने गर्व से भरे स्वर में कहा, ''मैंने आपका आसरा भी नहीं किया और भगवान ने चाहा तो कभी करूँगी भी नहीं।'' अब सुभागी उनके साथ ही रहने लगी।

उसने घर का सारा काम सँभाल लिया। बेचारी पहर रात से उठकर कूटने–पीसने में लग जाती, चौका–बरतन करती, गोबर थापती, खेत में काम करने चली जाती। दोपहर को आकर जल्दी–जल्दी खाना पकाकर सबको खिलाती।

रात को कभी माँ के सिर में तेल लगाती तो कभी उसकी देह दबाती। जहाँ

तक उसका बस चलता, माँ–बाप को कोई काम न करने देती। हाँ, भाई को न रोकती। सोचती, यह तो जवान आदमी है, ये काम न करेंगे तो गृहस्थी कैसे चलेगी?

मगर रामू को यह बुरा लगता। अम्मा और दादा को तिनका तक नहीं उठाने देती और मुझे पीसना चाहती है। यहाँ तक कि एक दिन वह आपे से बाहर हो गया। सुभागी से बोला, ''अगर उन लोगों से बड़ा मोह है, तो उनको लेकर अलग क्यों नहीं रहती हो! तब सेवा करो तो मालूम हो कि सेवा कड़वी लगती है या मीठी। दूसरों के बल पर वाहवाही लेना आसान है। बहादुर वह है, जो अपने बल पर काम करे।''

सुभागी ने तो कुछ जवाब न दिया। बात बढ़ जाने का भय था। मगर उसके माँ–बाप बैठे सुन रहे थे। महतो से न रहा गया। बोले, ''क्या है रामू, उस गरीबन से क्यों लड़ते हो?''

रामू पास आकर बोला, ''तुम क्यों बीच में कूद पड़े, मैं तो उसको कह रहा हूँ।''

तुलसी–''जब तक मैं ज़िंदा हूँ, तुम उसे कुछ नहीं कह सकते। मेरे पीछे जो चाहे करना। बेचारी का घर में रहना मुश्किल कर दिया है।''

रामू–''आपको बेटी बहुत प्यारी है, तो उसे गले में बाँधकर रखिए। मुझसे तो नहीं रुका जाता।''

तुलसी–''अच्छी बात है। अगर तुम्हारी यह मर्जी है, तो यही होगा। मैं कल गाँव के आदमियों को बुलाकर बँटवारा कर दूँगा। तुम चाहे अलग हो जाओ, सुभागी अलग नहीं होगी।''

रात को तुलसी लेटे तो वह पुरानी बात याद आई। जब रामू के जन्मोत्सव में उन्होंने रुपये कर्ज़ लेकर जलसा किया था और सुभागी पैदा हुई, तो घर में रुपये रहते हुए भी उन्होंने एक कौड़ी तक खर्च न की। पुत्र को रत्न समझा था, पुत्री को पूर्वजन्म के पापों का दंड। वह रत्न कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय!

दूसरे दिन महतो ने गाँव के आदमियों को इकट्ठा करके कहा, ''पंचो, अब रामू का और मेरा एक घर में निर्वाह नहीं होता। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग इंसाफ़ से जो कुछ मुझे दे दो, वह लेकर अलग हो जाऊँ। रात–दिन की बहस अच्छी नहीं।''

गाँव के मुखिया बाबू सजनसिंह बड़े सज्जन पुरुष थे। उन्होंने रामू को बुलाकर पूछा, ''क्यों भाई, तुम अपने बाप से अलग रहना चाहते हो? तुम्हें शर्म नहीं आती, माँ–बाप को अलग किए देते हो? राम! राम!''

रामू ने ढिठाई के साथ कहा, ''जब एक साथ गुज़र न हो, तो अलग हो जाना ही अच्छा है।''

यह कहता हुआ रामू वहाँ से चलता बना।

तुलसी–''देख लिया आप लोगों ने इसका मिज़ाज? भगवान ने बेटी को दुख दे दिया, नहीं तो मुझे खेती–बाड़ी लेकर क्या करना था। जहाँ रहता, वहीं कमाता खाता। भगवान ऐसा बेटा बैरी को भी न दें। लड़के से लड़की भली, जो कुलवंती होय।''

सहसा सुभागी आकर बोली, ''दादा, यह सब बँटवारा मेरे ही कारण तो हो रहा है, मुझे क्यों नहीं अलग कर देते?''

तुलसी ने कहा, ''बेटी, हम तुम्हें न छोड़ेंगे। चाहे संसार छूट जाए।''

गाँव में जहाँ देखो सबके मुँह से सुभागी की तारीफ़ हो रही थी। लड़की नहीं, देवी है। दो मर्दों का

काम भी करती है। उस पर माँ–बाप की सेवा भी किए जाती है। सजनसिंह तो कहते, यह इस जन्म की देवी है।

मगर शायद महतो को यह सुख बहुत दिनों तक भोगना न लिखा था।

सात–आठ दिन से महतो को बहुत तेज़ बुख़ार हुआ है। लक्ष्मी पास बैठी रो रही है। अभी एक क्षण पहले महतो ने पानी माँगा था पर जब तक वह पानी लाए, तब तक उनके हाथ–पाँव ठंडे हो गए। सुभागी उनकी यह दशा देखते ही रामू के घर गई और बोली, ''भैया! चलो, देखो आज दादा न जाने कैसे हुए जाते हैं। सात दिन से बुख़ार नहीं उतरा।''

रामू ने चारपाई पर लेटे–लेटे कहा, ''तो क्या मैं डॉक्टर–हकीम हूँ कि देखने चलूँ? जब तक अच्छे थे, तब तक तो तुम उनके गले का हार बनी हुई थीं। अब जब मरने लगे तो मुझे बुलाने आई हो?''

सुभागी ने फिर उससे कुछ न कहा, सीधे सजनसिंह के पास गई।

उधर सजनसिंह ने ज्यों ही महतो की हालत के बारे में सुना, तुरंत सुभागी के साथ भागे चले आए। वहाँ पहुँचे तो महतो की दशा और भी ख़राब हो चुकी थी। नाड़ी देखी तो बहुत धीमी थी। समझ गए कि ज़िंदगी के दिन पूरे हो गए। सजल नेत्र होकर बोले, ''अब कैसी तबीयत है?''

महतो जैसे नींद से जागकर बोले, ''बहुत अच्छी है भैया! अब तो चलने की बेला है। सुभागी के पिता अब तुम्हीं हो। उसे तुम्हीं को सौंपे जाता हूँ।''

सजनसिंह ने रोते हुए कहा, ''भैया महतो, घबराओ मत, भगवान ने चाहा तो तुम अच्छे हो जाओगे। सुभागी को तो मैंने हमेशा अपनी बेटी ही समझा है और जब तक जिऊँगा, ऐसा ही समझता रहूँगा। तुम निश्चिंत रहो। कुछ और इच्छा हो तो वह भी कह दो।''

महतो ने विनीत नेत्रों से देखकर कहा, ''और नहीं कहूँगा, भैया! भगवान तुम्हें सदा सुखी रखे।''

सजन–''रामू को बुलाकर लाता हूँ। उससे जो भूल–चूक हुई, क्षमा कर दो।''

महतो–''नहीं भैया, उस पापी का मुँह मैं नहीं देखना चाहता।''

इसके बाद गोदान की तैयारी होने लगी। रामू को गाँव भर ने समझाया पर वह अंत्येष्टि करने पर राज़ी न हुआ। कहा, ''जिस पिता ने मरते समय मेरा मुँह देखना स्वीकार न किया, वह न मेरा पिता है, न मैं उसका बेटा हूँ।''

लक्ष्मी ने दाह क्रिया की। सुभागी ने सारी व्यवस्था की। इन थोड़े से दिनों में सुभागी ने न जाने कैसे रुपये जमा कर लिए थे। जब तेरहवीं का सामान आने लगा तो गाँव वालों की आँखें खुल गईं।

तेरहवीं के दिन सारे गाँव के लोगों का भोज हुआ। चारों तरफ़ वाहवाही मच गई।

पिछले पहर का समय था। लोग भोजन करके चले गए थे। लक्ष्मी थककर सो गई। केवल सुभागी बची हुई चीज़े उठा–उठाकर रख रही थी कि ठाकुर सजनसिंह ने आकर कहा, ''अब तुम भी आराम करो बेटी, यह सब काम सवेरे कर लेना।''

सुभागी ने कहा, ''अभी थकी नहीं हूँ दादा! आपने जोड़ लिया? कुल कितने रुपये ख़र्च हुए?''

सजन–''वह पूछकर क्या करोगी बेटी?''

सुभागी–''कुछ नहीं, यों ही।''

सजनसिंह–''कोई तीन हज़ार रुपये होंगे।''

सुभागी ने सकुचाते हुए कहा, ''मैं इन रुपयों की देनदार हूँ।''

पति के देहांत के बाद से ही लक्ष्मी का दाना–पानी छूट गया। सुभागी के आग्रह पर चौके में जाती, मगर निवाला गले से नीचे न उतरता। पचास वर्ष हुए, एक दिन भी ऐसा न हुआ कि पति के बिना खाए उसने खुद खाया हो। अब उस नियम को कैसे तोड़े।

आख़िर उसे खाँसी आने लगी। दुर्बलता ने जल्द ही खाट पर डाल दिया। सुभागी अब क्या करे? ठाकुर साहब के रुपये चुकाने के लिए दिलोज़ान से काम करने की ज़रूरत थी। यहाँ माँ बीमार पड़ गई। अगर बाहर जाए तो माँ अकेली रहती है। उनके पास बैठे तो बाहर काम कौन करे! माँ की दशा देखकर सुभागी समझ गई कि इनका अंतिम समय भी आ पहुँचा है। महतो को भी तो यही बुख़ार हुआ था।

गाँव में और किसे फ़ुर्सत थी कि दौड़–धूप करता। सजनसिंह दोनों वक्त आते। लक्ष्मी की दशा बिगड़ती जा रही थी। यहाँ तक कि पंद्रहवें दिन वह भी संसार से विदा ले गई। उसने अपने अंतिम समय में सुभागी को आशीर्वाद दिया, ''तुम्हारे जैसी बेटी पाकर मैं तर गई। मेरा क्रिया–कर्म तुम्हीं करना। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि अगले जन्म में भी तुम मेरी कोख से ही जन्म लो।''

माता के देहांत के बाद सुभागी के जीवन का केवल एक लक्ष्य रह गया–सजनसिंह के रुपए चुकाना। तीन साल तक सुभागी ने रात को रात और दिन को दिन न समझा। उसकी कार्य–शक्ति और हिम्मत देखकर लोग दाँतों तले अँगुली दबाते थे। दिन भर खेती–बाड़ी का काम करने के बाद वह रात को आटा पीसती। तीसवें दिन तीन सौ रुपये लेकर वह सजनसिंह के पास पहुँच जाती। इसमें कभी नागा न पड़ता।

अब चारों ओर से उसकी शादी के पैगाम आने लगे। सभी उसको अपने घर की बहू बनाना चाहते थे। जिसके घर सुभागी जाएगी, उसके भाग्य फिर जाएँगे। सुभागी यही जवाब देती, ''अभी वह दिन नहीं आया।''

जिस दिन सुभागी ने आख़िरी किस्त चुकाई, उस दिन उसकी खुशी का ठिकाना न था। आज उसके जीवन का कठोर व्रत पूरा हो गया।

वह चलने लगी तो सजनसिंह ने कहा, ''बेटी, तुमसे एक प्रार्थना है। कहो कहूँ, या न कहूँ, मगर वचन दो कि मानोगी।''

सुभागी ने कृतज्ञ भाव से देखकर, ''दादा, आपकी बात न मानूँगी तो किसकी बात मानूँगी?''

सजन–''मैंने अब तक तुमसे इसलिए कुछ नहीं कहा क्योंकि तुम अपने को मेरा देनदार समझ रही थी। अब रुपये चुका दिए। मेरा तुम्हारे ऊपर कोई एहसान नहीं है। बोलो कहूँ?''

सुभागी–''आपकी जो आज्ञा हो।''

सजन–''देखो इनकार न करना, नहीं तो मैं तुम्हें अपना मुँह फिर कभी न दिखाऊँगा।''

सुभागी–''क्या आज्ञा है?''

सजन–''मेरी इच्छा है कि तुम मेरे घर की बहू बनकर मेरे घर को पवित्र करो। मैं जात–पाँत में विश्वास करता हूँ, मगर तुमने मेरे सारे बंधन तोड़ दिए। मेरा लड़का तुम्हारे नाम का पुजारी है। तुमने उसे देखा है। बोलो, मंज़ूर करती हो?''

सुभागी–''दादा, इतना सम्मान पाकर मैं पागल हो जाऊँगी।''

सजन–''तुम्हारा सम्मान भगवान कर रहे हैं बेटी! तुम साक्षात भगवती का अवतार हो।''

सुभागी–''मैं तो आपको अपना पिता समझती हूँ। आप जो कुछ करेंगे, मेरे भले के लिए ही करेंगे। आपका हुक्म कैसे टाल सकती हूँ?''

सजनसिंह ने उसके माथे पर हाथ रखकर कहा, ''बेटी, तुम्हारा सुहाग अमर हो। तुमने मेरी बात रख ली। मुझ–सा भाग्यशाली संसार में और कौन होगा?''

प्रेमचंद

शब्दार्थ

गोदान	–	गाय का दान	निवाला	–	कौर
सुहाग	–	सौभाग्य	व्रत	–	प्रण
विनीत	–	विनम्र	अंत्येष्टि	–	अंतिम क्रिया
मिज़ाज	–	तबीयत, स्वभाव	उजड्ड	–	गँवार, बे–लगाम
नागा	–	अंतर			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. तुलसी मेहतो के कितने बच्चे थे?
2. तुलसी मेहतो अपनी बेटी सुभागी से बहुत प्यार करते थे, क्यों?
3. तुलसी मेहतो ने गाँव वालों को क्यों इकट्ठा किया था?
4. सजनसिंह ने सुभागी को अपनी पुत्र वधू के रूप में क्यों चुना?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. सुभागी ने सम्भाल रखा था–
   (क) व्यापार का सारा काम (ख) घर का सारा काम
   (ग) समाज का सारा काम (घ) गाँव का सारा काम ( )
2. ''बहादुर वह है, जो अपने बल पर काम करे''–यह कहा–
   (क) तुलसी ने (ख) रामू ने
   (ग) सजनसिंह ने (घ) सुभागी ने ( )
3. गाँव के मुखिया सजनसिंह पुरुष थे–
   (क) कठोर (ख) सज्जन
   (ग) धनवान (घ) अक्खड़ ( )

निम्नलिखित वाक्यों को अपनी कॉपी में लिखकर सही वाक्य पर (✓) और गलत वाक्य पर (✗) का निशान लगाइए–

1. रामू ने घर का सारा काम–काज संभाल रखा था। ( )
2. रामू ने कहा–''जब एक साथ गुज़र न हो, तो अलग हो जाना ही अच्छा है।'' ( )
3. तुलसी ने कहा ''बेटी, हम तुम्हें न छोड़ेंगे। चाहे संसार छूट जाए।'' ( )
4. लक्ष्मी ने कहा ''अगले जन्म में भी तुम मेरी कोख से ही जन्म लो।'' ( )
5. ''दादा इतना सम्मान पाकर मैं पागल हो जाऊँगी।'' सुभागी ने कहा। ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सुभागी ने घर का क्या–क्या काम संभाल रखा था?
2. ''लड़के से लड़की भली, जो कुलवंती होय'' यह किसने और क्यों कहा?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ''रत्न कितना कठोर निकला और यह दंड कितना मंगलमय।'' तुलसी ने ऐसा क्यों सोचा?
2. तुलसी महतो ने अंतिम समय सजनसिंह से क्या बात कही?
3. लक्ष्मी ने अंतिम समय सुभागी को क्या आशीर्वाद दिया?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. सुभागी के जीवन का कठोर व्रत क्या था और उसने उसे कैसे पूरा किया?
2. कहानी 'सुभागी' का सार अपनी भाषा में लिखिए।

भाषा की बात

1. उसकी कार्य शक्ति और हिम्मत देख लोग दाँतों तले ऊँगली दबाते थे। रेखांकित वाक्यांश एक मुहावरा है, जिसका अर्थ आश्चर्य करना है। आप भी निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

   1. लाल–पीला होना।
   2. नौ–दो ग्यारह होना।
   3. दु:ख की सीमा न रहना।
   4. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए–
   तुलसी देख लिया आप लोगों ने इसका मिज़ाज भगवान ने बेटी को दुख दे दिया नहीं तो मुझे खेती बाड़ी लेकर क्या करना था जहाँ रहता वहीं कमाता खाता भगवान ऐसा बेटा बैरी को भी न दे लड़के से लड़की भली जो कुलवंती होय

पाठ से आगे

1. तुलसी महतो और लक्ष्मी अगर सुभागी को घर से अलग कर देते तो क्या होता?
2. अगर सुभागी अपने माता–पिता की सेवा न करती तो उसके माता–पिता का जीवन कैसा होता?

चर्चा करें

1. 'परिश्रम सफलता की कुंजी है', कैसे? आपस में चर्चा कीजिए।
2. मृत्युभोज सामाजिक कुरीति है। हमारे समाज में ऐसी अनेक कुरीतियाँ हैं। उनकी सूची बनाकर एक–एक कुरीति पर एक–एक विद्यार्थी कक्षा में अपने विचार प्रकट करें।
3. हमारे समाज में अनेक अच्छी प्रथाएँ हैं, जैसे संयुक्त परिवार प्रथा आदि। ऐसी अच्छी प्रथाओं पर चर्चा कीजिए।

यह भी करें–

सजनसिंह व सुभागी के संवाद को आधार बनाकर बाल–सभा में मंचन कीजिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"कायर व्यक्ति अपनी मृत्यु से पहले कई बार मर चुकते हैं; किंतु वीर पुरुष जीवन में एक ही बार मरते हैं।"